आचारांग सूत्र भाग-२ (फोल्डर नं. ००१२३२)

मुख्य टाइटल
समर्पण --५
अभिमत --६
प्रकाशकीय--७
आमुख --९
सम्पादकीय-- १२
विषयसूची -- १८
प्रथम चूला-सात अध्ययन
प्रथम पिंडैषणा अध्ययन – (११ उद्देशक) -- १-११३
प्रथम उद्देशक
३२४ सचित्त –संसक्त आहारैषणा--५
३२५-२६ सबीज अन्न-ग्रहण की एषणा-- १०
३२७-३० अन्यतीर्थिक गस्थ सहगमन निषेध-- १३
३३१-३२ ओद्देशिकादि दोष-रहित आहार की एषणा-- १६
३३३ नित्याग्रपिंडादि ग्रहण-निषेध-- १९
द्वितीय उद्देशक
३३५ अष्टमी पर्वादि में आहार-ग्रहण-विधि-निषेध -- २२
३३६ भिक्षा योग्य कुल-- २३
३३७ इन्द्रमह आदि उत्सव में अज्ञानादि एषणा-- २५
३३८-३३९ संखडि-गमन-निषेध -- २६
तृतीय उद्देशक
३४०-४२ संखडि-गमन में विविध दोष -- ३०
३४३ शंकाग्रस्त आहार-निषेध-- ३६
३४४-४५ भंडोपकरण-सहित गमनागमन -- ३७
३४६-४७ निषिद्ध गृह-पद -- ३९
चतुर्ध उद्देशक
३४८ संखडिगमन निषेध -- ४१
३४९ गोदोहन वेला में भिक्षार्थ-प्रवेश-निषेध --- ४४
३५०-५१ अतिथि-श्रमण आने पर भिक्षाविधि--- ४५
पंचम उद्देशक
३५२ अग्रपिंड ग्रहण-निषेध--- ४८
३५३-५५ विषममार्गादि से भिक्षाचर्यार्थ गमन-निषेध --- ५०
३५६ बंद द्वार वाले गृह में प्रवेश-निषेध -- ५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५७-५८ पूर्व प्रविष्ट श्रमण०माहनादि की उपस्थिति में भिक्षाविधि -------------------------- ५५
षष्ठ उद्देशक
३५९ कुक्कुटादि प्राणी होने पर अन्य मार्ग गवेषणा -- ५९
३६० भिक्षार्थ प्रविष्ट का स्थान व अंगोपांग संचालन विवेक... ------------------------------- ६०
३६१-६४ सचित्त-मिश्रित आहार-ग्रहण निषेध -- ६६
सप्तम उद्देशक
३६५-६६ मालाहृत दोषयुक्त आहार-ग्रहण निषेध-- ६९
३६७ उद्भिन्न दोषयुक्त आहार-निषेध --- ७२
३६८ षट्काय जीव प्रतिष्ठित आहार ग्रहण-निषेध--- ७३
३६९-३७२ पानक-एषणा-- ७६
अष्टम उद्देशक
३७३ अग्राह्य पानक निषेध-- ७९
३७४ आहार-गंध में अनासक्ति -- ८१
३७५-३८८ अपक्क-शस्त्र-अपरिणत वनस्पति आहार-ग्रहण निषेध----------------------------- ८२
३८९ वनस्पतिकायिक आहार गवेषणा भिक्षु भिक्षुणी की ज्ञान...---------------------------- ९०
नवम उद्देशक
३९०-३९२ आधाकर्मिक आदि ग्रहण का निषेध --- ९१
३९३-३९६ ग्रासैषणा दोष-परिहार-- ९४
३९७-३९८ ग्रासैषणा-विवेक --- ९७
दसम उद्देशक
३९९-४०१ आहार वितरण विवेक -- ९८
४०२-४०४ बहु-उज्झित-धर्मी-आहार-ग्रहण-निषेध -- १००
४०५ अग्राह्य लवण-परिभोग-परिष्ठापन विधि --- १०४
४०६ एषणा-विवेक से भिक्षु-भिक्षुणी की सर्वांगीण समग्रता ---------------------------------- १०५
एकादश उद्देशक
४०७-४०८ मायायुक्त परिभोगैषणा विचार --- १०६
४०९ सप्तपिंडैषणा-पानैषणा --- १०८
४१० भिक्षु के लिए सात पिंडैषणा और पानेषणाओं के जानने की प्रेरणा ------------------ ११०
४११ पिंडैषणा और पानैषणा के विधिवत् पालन से ज्ञानादि... ------------------------------ ११३
शय्यैषणा-द्वितीय अध्ययन (३ उद्देशक)-- ११४-१६८
प्रथम उद्देशक
४१२ उपाश्रय-एषणा (प्रथम विवेक) -- ११६
४१३-४१४ उपाश्रय-एषणा (द्वितीय विवेक) -- ११७
४१५-४१८ उपाश्रय-एषणा (तृतीय विवेक)--- ११९
४१९ उपाश्रय-एषणा (चतुर्थ विवेक) -- १२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२०-४२५ उपाश्रय-एषणा (पंचम विवेक)--१२५
४२६ शय्यैषणा-विवेक से भिक्षु-भिक्षुणी की ज्ञानादि आचार की... -------------------------१३१
द्वितीय उद्देशक
४२७-४३० गृहस्थ-संसक्त उपाश्रय-निषेध---१३१
४३१ उपाश्रय-एषणाः विधि-निषेध--१३५
४३२-४४१ नवविध शय्या-विवेक---१३६
४४२ शय्या विवेक से भिक्षु-भिक्षुणी के ज्ञानादि आचार की समग्रता----------------------१४६
तृतीय उद्देशक
४४३ उपाश्रय-छलना-विवेक --१४६
४४४ उपाश्रय में यतना के लिए प्रेरणा--१५०
४४५-४४६ उपाश्रय-याचना विधि --१५२
४४७-४५४ निषिद्ध उपाश्रय---१५४
४५५ संस्तारक ग्रहणाग्रहण-विवेक --१५८
४५६-४५७ संस्तारक एषणा की चार प्रतिमाएँ---१५९
४५८ संस्तारक प्रत्यर्पण विवेक---१६३
४५९ उच्चार प्रस्रवण-भूमि प्रतिलेखना ---१६४
४६०-४६१ शय्या-शयनादि विवेक---१६५
४६२ शय्या-समभाव ---१६६
४६३ शय्यैषणा विवेक-भिक्षु-भिक्षुणी का सम्पूर्ण भिक्षुभाव----------------------------------१६८
ईर्या-तृतीय अध्ययन (३ उद्देशक)-- १६९-२०८
प्रथम उद्देशक
४६४-४६८ वर्षावास विहार चर्या---१७१
४६९-४७३ विहारचर्या में दस्यु-अटवी आदि के उपद्रव--१७५
४७४-४८२ नौकारोहणविधि --१८०
४८३ ईर्या विषयक विशुद्धि-भिक्षु-भिक्षुणी की समग्रता --१८६
द्वितीय उद्देशक
४८४-४९१ नौकारोहण में उपसर्ग आने पर-जल-तरण ---१८७
४९२ ईर्यासमिति विवेक--१९०
४९३-४९७ जंघाप्रमाण जल-संतरण-विधि---१९१
४९८-५०२ विषम-मार्गादि से गमन-निषेध ---१९३
५०३ संयमपूर्वक विहारचर्या साधुता की समग्रता--१९७
तृतीय उद्देशक
५०४-५०५ मार्ग में वप्र आदि अवलोकन-निषेध---१९७
५०६-५०९ आचार्यादि के साथ विहार में विनय-विधि ---२००
५१०-५१४ हिंसाजनक प्रश्नों में मौन एवं भाषा-विवेक ---२०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१५-५१९ विहारचर्या में साधु को निर्भयता और अनासक्ति की प्रेरणा ---------------------२०५
भाषाजात-चतुर्थ अध्ययन (२ उद्देशक) ---
प्रथम उद्देशक
५२० भाषागत आचार अनाचार विवेक---२११
५२१ षोडश वचन एवं संयत भाषा-प्रयोग ---२१२
५२२-५२९ चार प्रकार की भाषा-विहित-अविहित ---२१५
५३०-५३१ प्राकृतिक दृश्यों में कथन-अकथन---२२०
५३२ भाषा-विवेक से साधुता की समग्रता---२२१
द्वितीय उद्देशक
५३३-५४८ सावद्य-निरव्दय भाषा-विवेक--२२२
५४९-५५० शब्दादि विषयक भाषा-विवेक--२३०
५५१ भाषा-विवेक ---२३२
५५२ भाषण-विवेक से साधुता की समग्रता ---२३२
वस्त्रैषणा-पंचम अध्ययन (२ उद्देशक) -- २३३-२६१
प्रथम उद्देशक
५५३ ग्राह्य वस्त्रों का प्रकार और परिमाण ---२३५
५५४ वस्त्र-ग्रहण की क्षेत्र सीमा---२३७
५५५-५५६ औद्देशिक आदि दोषयुक्त वस्त्रैषणा का निषेध --२३८
५५७-५५८ बहुमूल्य-बहुआरंभ-निष्पन्न वस्त्र-निषेध--२४०
५५९-५६० वस्त्रैषणा की चार प्रतिमाएँ--२४३
५६१-५६७ अनैषणीय वस्त्र-ग्रहण-निषेध --२४५
५६८ वस्त्र-ग्रहण से पूर्व प्रतिलेखना-विधान---२४८
५६९-५७१ ग्राह्य-अग्राह्य वस्त्र-विवेक --२४९
५७२-५७४ वस्त्र-प्रक्षालन-निषेध--२५१
५७५-५७९ वस्त्र-सुखाने का विधि व निषेध --२५२
५८० वस्त्रैषणा विवेक से साधुता की समग्रता --२५४
द्वितीय उद्देशक
५८१ वस्त्र धारण की सहज विधि--२५५
५८२ समस्त वस्त्रों सहित विहारादि विधि-निषेध--२५६
५८३ प्रातिहारिक वस्त्र-ग्रहण प्रत्यर्पण-विधि --२५७
५८४-५८६ वस्त्र के लोभ तथा अपहरण-भय से मुक्ति---२५९
५८७ वस्त्र-परिभोगैषणा विवेक से साधुता की समग्रता---२६१
पात्रैषणा-षष्ठ अध्ययन (२ उद्देशक) --- २६२-२७६
प्रथम उद्देशक
५८८-५८९ पात्र के प्रकार एवं मर्यादा--२६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५९०-५९१ एषणा-दोषयुक्त पात्र-ग्रहण निषेध ---- २६४
५९२-५९३ बहुमूल्य पात्र-ग्रहण निषेध ---- २६५
५९४-५९५ पात्रैषणा की चार प्रतिमाएँ ---- २६६
५९६-५९८ अनेषणीय पात्र-ग्रहण निषेध ---- २६९
५९९-६०० पात्र-प्रतिलेखन विधान ---- २७१
६०१ पात्रैषणा-विवेक से साधुता की समग्रता ---- २७३
द्वितीय उद्देशक
६०२ पात्र बीजादि युक्त होने पर ग्रहण-विधि ---- २७३
६०३-६०४ सचित्त संसृष्ट पात्र को सुखाने की विधि ---- २७४
६०५ विहार-समय पात्र विषयक विधि-निषेध ---- २७६
६०६ पात्रैषणा-विवेक से साधुता की समग्रता ---- २७६
अवग्रह प्रतिमा-सप्तम अध्ययन (२ उद्देशक) ---- २७७-२९९
प्रथम उद्देशक
६०७ अवग्रह-ग्रहण की अनिवार्यता ---- २७९
६०८-६११ अवग्रह-याचना-विविध रूप ---- २८१
६१२-६१९ अवग्रह-वर्जित स्थान ---- २८५
६२० अवग्रह-अनुज्ञा-ग्रहण-विवेक साधुता की समग्रता ---- २८७
द्वितीय उद्देशक
६२१-६३२ आम्रवन आदि में अवग्रह विधि-निषेध ---- २८८
६३३-६३४ अवग्रह-ग्रहण में सात प्रतिमा ---- २९५
६३५ पंचविध अवग्रह ---- २९८
६३६ ज्ञानादि आचारों और समितियों सहित साधु सदा प्रयत्नशील रहे ---- २९९
द्वितीय चूला-सप्त सप्तिका (७ अध्ययन)
स्थान-सप्तिका – अष्टम अध्ययन
६३७ अण्डादि युक्त स्थान ग्रहण-निषेध ---- ३०१
६३८-६३९ चार स्थान प्रतिमा ---- ३०३
६४० स्थानैषणा-साधुता का आचार-सर्वस्व ---- ३०५
निषीधिका-सप्तिका-नवम अध्ययन
६४१-६४२ निषीधिका-विवेक ---- ३०७
६४३ निषीधिका में अकरणीय कार्य ---- ३०९
६४४ निषीधिका का उपयोग-विवेक साधुता का आचार सर्वस्व ---- ३०९
उच्चार-प्रस्रवण सप्तिका-दशम अध्ययन
६४५ उच्चार-प्रस्रवण विवेक ---- ३११
६४६-६६७ मल-मूत्र-कैसे स्थण्डिल पर करे, कैसे पर नहीं करे ---- ३१२
६६८ उच्चार-प्रस्रवण व्युत्सर्गार्थ स्थण्डिल-विवेक साध्वाचार का सर्वस्व ---- ३२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द-सप्तिका-एकादश अध्ययन
६६९-६७२ वाद्यादि शब्द-श्रवण-उत्कंठा निषेध ---------- ३२८
६७३-६७९ विविध स्थानों में शब्देन्द्रिय संयम ---------- ३३१
६८०-६८६ मनोरंजन स्थलों में शब्दश्रवणोत्सुकतका-निषेध ---------- ३३३
६८७-६८८ शब्द-श्रवण में आसक्ति आदि का निषेध ---------- ३३७
रूप-सप्तिका-द्वादश अध्ययन
६८९ रूप-दर्शन-उत्सुकता निषेध ---------- ६३९
पर-क्रिया सप्तिका-त्रयोदश अध्ययन
६९० पर-क्रिया-स्वरूप ---------- ३४४
६९१-७०० पाद-परिकर्मरूप पर क्रियानिषेध ---------- ३४४
७०१-७०७ काय-परिकर्म-परक्रिया-निषेध ---------- ३४७
७०८-७१४ व्रण-परिकर्म रूप परक्रिया-निषेध ---------- ३४८
७१५-७२० ग्रन्थी-०अर्श-भगन्दर आदि पर प्रक्रिया-निषेध ---------- ३५०
७२१-७२३ अंगपरिकर्म रूप परक्रिया-निषेध ---------- ३५१
७२५-७२८ परिचर्यारूप परक्रिया-निषेध ---------- ३५३
७२९ परक्रिया से विरति साध्वाचार का सर्वस्व ---------- ३५५
अन्योन्यक्रिया सप्तिका-चतुर्दश अध्ययन
७३०-७३२ अन्योन्यक्रिया-निषेध ----------
तृतीय चूला (१ अध्ययन)
भावना-पन्द्रहवाँ अध्ययन
७३३ भगवान महावीर के पंच कल्याणक नक्षत्र ---------- ३६२
७३४ भगवान का गर्भावतरण ---------- ३६४
७३५ देवानन्दा का गर्भ-साहरण ---------- ३६६
७३६-७३९ भगवान महावीर का जन्म ---------- ३६८
७४० भगवान का नामकरण ---------- ३७०
७४१ भगवान का संवर्द्धन ---------- ३७१
७४२ यौवन एवं पाणिग्रहण ---------- ३७२
७४३ भगवान के प्रचलित तीन नाम ---------- ३७३
७४४ भगवान के परिवारजनों के नाम ---------- ३७४
७४५ भगवान के माता-पिता की धर्म-साधना ---------- ३७६
७४६ दीक्षाग्रहण का संकल्प ---------- ३७७
७४७-७४९ सांवत्सरिक दान ---------- ३७८
७५०-७५२ लोकांतिक देवों द्वारा उद्बोध ---------- ३७९
७५३ अभिनिष्क्रमण महोत्सव के लिए देवों का आगमन ---------- ३८०
७५४ शिविका निर्माण ---------- ३८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७५५-७५९ शिविकारोहण--३८६
७६०-७६५ प्रव्रज्यार्थ प्रस्थान---३८६
७६६-७६८ सामायिक चारित्र ग्रहण ---३८८
७६९ मनःपर्यवज्ञान की उपलब्धि और अभिग्रह-ग्रहण--३९१
७७०-७७१ भगवान का विहार एवं उपसर्ग--३९३
७७२-७७४ भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति--३९५
७७५ भगवान की धर्म-देशना --३९८
७७६ पंच महाव्रत एवं षड्जीवनिकाय की प्ररूपणा --३९८
७७७ प्रथम महाव्रत---३९९
७७८-७७९ प्रथम महाव्रत और उसकी पाँच भावनाएँ --४००
७८०-७८२ द्वितीय महाव्रत और उसकी पाँच भावनाएं ---४०४
७८३-७८४ तृतीय महाव्रत और उसकी पाँच भावनाएँ--४०८
७८६-७८७ चतुर्थ महाव्रत और उसकी पाँच भावनाएँ ---४१२
७८७-७९१ पंचम महाव्रत और उसकी पाँच भावनाएँ ---४१५
७९२ उपसंहार ---४२१

चतुर्थ चूला (१ अध्ययन)

विमुक्ति-सोलहवाँ अध्ययन

७९३ अनित्य-भावना बोध ---
७९४-७९५ पर्वत की उपमा तथा परीषहोपसर्गसहन प्रेरणा ---४२४
४९६-८०० रजत शुद्धि का दृष्टान्त और कर्ममल शुद्धि की प्रेरणा ---------------------------------४२५
८०१ भुजंग दृष्टांत द्वारा बंधन-मुक्ति की प्रेरणा ---४२८
८०२-८०४ महासमुद्र का दृष्टांत-कर्म अन्त करने की प्रेरणा ---------------------------------------४२८

परिशिष्ट-- ४३१-४८०

१. विशिष्ट शब्द सूची--४३३
२. गाथाओं की अनुक्रमणिका---४७०
३. जाव शब्द पूरक-सूत्र-निर्देश --४७१
४. संपादन विवेचन में प्रयुक्त संदर्भ ग्रन्थों की सूची---४७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org